Page No.:
Date:

# HISTORY (H)
## B.A. - III
## PAPER - Vth.
## HISTORY OF INDIA (1550 - 1750)
## UNIT - 7th - Decline of Mugal.

⇒ **मुगल साम्राज्य का पतन :-**

⇒ मराठों का उत्कर्ष :-

दक्षिण में मराठों और मुगलों का संघर्ष चलता रहा, इसमें मराठा विजयी हुए और मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हुआ।

⇒ औरंगजेब की धार्मिक नीति :-

औरंगजेब की धार्मिक नीति अनुदार थी। गैर मुस्लिम जनता उससे असंतुष्ट थी। उसने मंदिरों को तोड़कर तथा मूर्तियों को अपवित्र कर हिन्दुओं की धार्मिक भावना को चोट पहुँचाई तथा जजिया तथा तीर्थयात्रा जैसे अपमानजनक कर लगाये। हिन्दुओं को उच्च पदों से भी अपदस्थ कर उसे अपमानित किया तथा राजपूतों से शत्रुता की। वह योग्य हिन्दू तथा राजपूतों की कार्यकुशलता का उपयोग नहीं किया।

Scanned with CamScanner

मुसलमानों में भी शिया और सूफी मतावलम्बी उससे नाराज थे। उसके साथ भी वह द्वेषपूर्ण नीति का पालन किया।

७ **औरंगजेब की शंकालु प्रवृत्ति:-**
औरंगजेब स्वभाव से शंकालु था उसने विद्रोह के डर से अपने बेटों को भरपूर सैनिक प्रशिक्षण नहीं दिया। अशक्त तथा अनुभवहीन शहजादे विशाल मुगल साम्राज्य की हिफाजत नहीं कर सके।

७ **औरंगजेब की दक्षिण नीति:-**
औरंगजेब ने बीजापुर और गोलकुंडा के मुसलमान राज्यों को मुगल साम्राज्य से मिलकर भयंकर गलती की। इससे मराठे सीधे मुगल साम्राज्य में घुसकर लूटपाट करने लगे बीच में कोई रुकावट नहीं नहीं रही। औरंगजेब की नीति के कारण उसे दक्षिण में भयंकर लम्बे और पीड़ादायक युद्ध में फसना पड़ा। इससे मुगल साम्राज्य को सैनिक प्रशासनिक और आर्थिक रूप से खोखला कर दिया। दक्षिण में औरंगजेब के पड़े रहने से उत्तरी भारत के

Page No.:
Date:

शासकों में गुटबंदी आ गई। तथा वे एक दूसरे के खिलाफ कार्य कर साम्राज्य की शक्ति को क्षीण करने लगे।

⇒ मुगल साम्राज्य के पतन के आर्थिक कारण :-

⇒ जनता की उपेक्षा :-

मुगल साम्राज्य निरंतर साम्राज्य के विस्तार में लगे रहे। लोगों की आर्थिक कुछ आवश्यकताओं का कोई ध्यान नहीं दिया। औरंगजेब ने अपने 50 वर्षों के शासन काल में न तो यातायात की व्यवस्था की और न शिक्षा व स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दिया। औरंगजेब ने कृषि के भी विकास का कोई ध्यान नहीं दिया। केवल युद्धों के नाम पर भू-राजस्व वसूल करता रहा। जागीरदारों और जागीरदारों की जमींदारी बदलने लगे। इससे जमींदार कम से कम समय में अधिक पाने के लिए प्रयत्न करने लगे। परिणाम-स्वरूप वे किसानों पर जोर-जुल्म करने लगे। किसानों के असंतोष से उत्पादन कम होने लगे।

Page No.:
Date:

७) कृषि की अवनति :-
कृषि की उन्नति की ओर मुगल साम्राज्य का बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया। कृषि आय का मुख्य स्रोत था, फिर भी उपेक्षित रहा। कृषि की अवनति से किसान भी गरीब बने रहे तथा बढ़ती गरीबी से निराश होकर किसानों ने भी समय-समय पर विद्रोह किये। सतनामी, जाट, सीख के विद्रोह ने भी किसानों को नुकसान पहुँचाया। वे डाकू लुटेरों के चपेट मे आ गये, कहीं-कहीं तो किसानों तथा जमींदारों ने भी डाकू तथा लुटेरों के धन्धे बना लिये थे। इस प्रकार मुगल साम्राज्य में कानून तथा व्यवस्था समाप्त हो गयी थी।

८) राजकोष का रिक्त होना :-
मुगल काल के सभी शासकों ने अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए दीर्घकालीन खर्चीले युद्ध किये। इसके परिणाम स्वरूप राजकोष रिक्त हो गया। औरंगजेब के शासन के अंतिम वर्षों में सैनिकों के वेतन देने के लिए भी पैसा नहीं बचा।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार हम देखते हैं कि मुगल साम्राज्य के सभी राजनीतिक महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए शासक ने आर्थिक दोहन करना शुरू किया जिससे कि जनता में विद्रोह की भावना बलवती हो गई। तथा बाहरी लोगों का यहाँ पर वर्चस्व कायम हो गया तथा एक समय के बाद मुगल साम्राज्य का पतन हो गया।

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D. College Tajpur

Scanned with CamScanner